बालगीतों की छाँव में

मुस्कान, सीख और संस्कारों से सजी बाल कविताएँ

श्यामबाबू शुक्ला
'विमल'

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Shyambabu Shukla 'Vimal' 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-823-7

Cover design: Aafiya Saifi
Typesetting: Namrata Saini

First Edition: May 2026

समर्पण

यह समर्पण बाल, जन मन को समर्पित
माँ की गोदी, से निकल स्कूल जाते
खेलने को दिल मचलता, फिर भी पढ़ते
पढ़ते इतना, खेलना ही भूल जाते
दादी के मन को मगन कर देते इतना
दादा को उँगली पकड़ चलना सिखाते
बाल कविता पढ़ते, हँसते धैर्य रखते
लौटते घर मन में आदर भाव लाते
पाठ पढ़ते शील का, प्रतिभा निखरती
मन 'विमल' आँगन विचरते मुस्कराते
राष्ट्र के उन्नत शिखर पर, चढ़ के क्रमशः
विश्व को आलोक देकर जगमगाते

विनम्र निवेदन

आज के तनाव, भरे जीवन में, मानव अनेक प्रकार की मानसिक चिन्ताओं से घिरा प्रतीत होता है फलस्वरूप उसकी शारीरिक क्षमता चिन्ताओं के आघात–प्रतिघात से नित–प्रति घटती चली जाती है। स्पष्ट है कि मनुष्य दावानल सदृश अपने शरीर को निरन्तर दग्ध करता रहता है काम का अधिक बोझ, आज के विकास के युग की सबसे बड़ी समस्या है, हमने विश्व पटल पर, उन्नति और प्रगति के अनेक सोपानों को गढ़ा तो है परन्तु अत्यधिक कर्मवीर होने के नाते, किसी हद तक स्वयं को नुकसान भी पहुँचाया है नैतिक क्षरण, सामाजिक मूल्यों के अवमूल्यन के साथ–साथ शारीरिक क्षरण आज की ज्वलन्त समस्या है वर्तमान की बढ़ती हुई समस्याओं ने मनुष्य की शताधिक जीने की परिकल्पना पर ग्रहण का प्रश्न चिन्ह सा लगा रखा है।

मैंने अपनी पूर्व प्रकाशित 'अंगारों के पथ पर' नामक कविता संग्रह में, इन समस्याओं का उल्लेख अपनी छोटी–छोटी रचनाओं के माध्यम से करने का प्रयास भी किया था जिसके अनुकरण में कुछ सार्थक परिणाम भी समाज में दिखाई दे रहे हैं उक्त संग्रह की अनेक विद्वत जनो ंद्वारा सराहना की गई तथा अनेक प्रबुद्ध लोगों द्वारा इसे हृदयंगम भी किया गया।

कई वर्षो से मैं अनेक अनचाही व्यक्तिगत समस्याओं से जूझता रहा जिससे अपनी कविता को अपने पाठकों तक पहुँचाने में सफल नहीं हो पाया अनेक दु:खों के बीच कोरोना काल की भयावहता ने हमारी धर्म पत्नी श्रीमती महेश्वरी देवी को हमसे छीन लिया, अब मैं स्वयं को अभाव ग्रस्त निर्बल मान बैठा।

इसी दु:ख बीच मुझे ख्याल आया कि क्यों न मैं पुनः अपने छोटे बच्चों के पहुँच जाऊँ एक शिक्षक होने के नाते मेरा सारा जीवन इन्हीं नौनिहाल और किशोरों के बीच में व्यतीत हुआ पूर्व में जब मैं तमाम समस्याओं से घिरा इनके बीच पहुँचता था तो मेरी सारी आगुन्तक परेशानियाँ इनकी मुस्कराहट के बीच बैठकर छूमन्तर हो जाती थी। मैंने समाज में अपने जीवन को केवल और केवल शिक्षक के रूप में प्रस्तुत किया। यह अलग बात है कि लोगों ने मेरा किस प्रकार का और कैसा भी अपनी दृष्टि से आकलन किया हो।

इन बालकों की भाव भंगिमा, चितवन और मुस्कान में, मैं एक बार फिर खो गया और अपने बचपन को याद करते हुए फिर मैं इन निश्चल भगवान के स्वरूप पवित्र आत्माओं के साथ जुड़ गया। और एक बार फिर कागज और कलम उठाकर इनके लिए कुछ शब्द, इनकी भावनाओं को पहचानते हुए लिखने का प्रयास करने लगा। माँ शारदे की अनुकम्पा से कुछ ही समय में बाल मन

कल्पनाओं ने मेरे मन मस्तिष्क पर अधिकार जमा लिया और मैं बालकों के लिए रचनाएँ लिखने में संलग्न हो गया।

मेरा मानना है कि यह लघु बाल रचनाएं, हमारे तनाव युक्त जीवन को तनाव मुक्त बनाने में सफल होगी, तथा बाल सुलभ इन कविताओं को गीत, लय में संजोने का मेरा प्रयास कहाँ तक सफल होगा, यह मैं नहीं जानता, लेकिन मेरे विचार से यह रचनाएं उन पढ़ाई में व्यस्त रहने वाले छात्र–छात्राओं को सुखद अनुभूति प्रदान करेंगी जिन्हें गुनगुनाते हुए वह स्कूल जायेंगे। साथ ही आज के खेल के अभाव ग्रस्त उनके जीवन में वे खेलों की मानसिक अनुभूति का मार्ग प्रशस्त करेंगी। और वह आत्म सन्तोष अनुभव कर सकेगे। तथा जब उनके कण्ठ से उनके अविभावक इन लय बद्व कविताओं का श्रवण करेंगे तब यह रचनांए उनके अशान्त जीवन को आत्म संतुष्टि सहित आनन्द प्रदान करने में सहायक होगी।

मेरे इस बाल सुलभ कविता संग्रह की सफलता कहाँ तक सुनिश्चित रहेगी इसका निर्णय हमारे बाल पाठको सहित प्रबुद्व मनीषी जन ही करेंगे। यदि यह लघु कवितायें, जिनकी संख्या मात्र इक्यावन है पाठकों को आनन्द प्रदान कर सकी तो मैं इसे अपने जीवन के समय की बड़ी सफलता मानूँगा तथा एक और पुण्य अर्जित करने का सौ भाग्य प्राप्त कर सकूँगा।

और मैं अधिक क्या निवेदन करूँ यदि मन को शान्ति मिल जाये तो आज के तनाव भरे जीवन में, इससे बड़ी कोई अन्य उपलब्धि नहीं हो सकती और वह केवल बच्चों के प्रति प्रेम और उनको प्रदान किया स्नेह ही हो सकता है। और जो उनके लिए शब्द सुमन रचे गये हैं वह उनके मन मस्तिष्कों पर संस्कारों के उर्वराक्षेत्र के विस्तार का रूप ले सकते हैं। प्रत्येक रचना में अपने बाल पाठकों के लिए एक सद्सन्देश देने का हमने प्रयास किया है आशा ही नहीं बल्कि विश्वास भी है कि उनका इस कविता संकलन से पर्याप्त मनोरंजन होगा और परिणाम में उनके अन्दर राष्ट्र के प्रति नवस्फूर्ति सहित नैतिक, नैष्ठिक, भाव जागृत होगे।

भवदीय

श्यामबाबू शुक्ल 'विमल'

विमल कुटी, पूरनपुर (पीलीभीत)

अनुक्रमणिका

हे! अम्ब तू बाल वाणी प्रखर दे 1
माँ का बच्चे को प्रातः सौन्दर्य का सन्देश 2
कुबेर ने भंडारा करवाया 4
बालगीत गाइये 5
टप टप चुएँ पेड़ से आम 6
बदरी आई बदरी आयी 7
पतंग की लूट 8
मोनू की टाफी 9
धूप निकली है भाई 10
दीदी का भइया 11
मम्मी मेरी फ्राक निराली 12
आओ आ के बनो बराती 13
समझो केवल मुझे न बच्चा 14
गये शेख चिल्ली जापान 15
शेर की दावत 16
अन्नू पन्नू और साधु 18
छाता लेकर निकली रानी 20
लाया ताजा गोल टमाटर 21
दंगा मल का दंगा 22
कहलाता खरगोश 24
कउए ने पतंग उड़ाई 25
बाल खिलौने 26
बादल आया, बादल आया 28
चाँद पर सैर 29
नदी किनारे लगी फसल 31
मदारी और बन्दर 33
मम्मी लल्ला बुला रहा है 35

गुन गुन जी 37
जामुन काले बड़े निराले 38
कितना मीठा लाल अनार 39
नाचो मोर 40
नये साल में बजा 41
चिड़ियां उड़ती जाती है 42
बन जाते हम कूद के 43
गुड्डे की सगाई 44
तुम्हें मानना सदा बड़ों का कहना 45
स्कूल चलो, स्कूल चलो 46
स्वच्छ रहे अपना घर आंगन 47
तितली 49
झरने नीर झरा करते है 50
लौट–लौट आ जाती ठंड 51
प्रातः काल टहलना बच्चों 52
पोलियो उन्मूलन अभियान 53
प्यारा भारत देश 54
बादल बरस बरस झर झरते 55
बसन्ती वायु में पिन्टू 57
डब्लू की मित्रता 59
बसन्ती वयारों का उपहार लाया 61
बच्चों गीत प्यार के गाये 63
पहेलियां–1 64
पहेलियां–2 65

हे! अम्ब तू बाल वाणी प्रखर दे

हे! अम्ब तू बालवाणी प्रखर दे
मेरी मातु आराधना मैं करूँगा
बजाती है वीणा मधुर राग भर जो
मगन मन चरण वन्दना मैं करूँगा
खिले पुष्प में मातु खुशबू जो तेरी
उसी से तेरी अर्चना मैं करूँगा
मेरे मन के मन्दिर में तू बैठ जा माँ
यही तुझसे अब कामना मैं करूँगा
मधुर कण्ठ कलनाद भर दे ज़हन मैं
यही तो तेरी प्रार्थना मैं करूँगा
हृदय में बिठा बालमन कल्पना को
शरण में पड़ा बाल रचना करूँगा
बने मुझसे जो बाल हित में सहायक
'विमल' मन उसी साधना को करूँगा

माँ का बच्चे को प्रातः सौन्दर्य का सन्देश

उठो लाल प्रातः है चिड़िया चहकती
चली शर्बरी धीमे–धीमे सरकती
निशाकर निशा से विदा ले चला है
सरोवर में वृन्दों से पंकज खिला है
शिवालय में ध्वनि घंटियों की है बजती
चली शर्बरी धीमें–धीमे सरकती

ललित अरूणिमा नभ में देती दिखाई
मेरे लाल ईशान में ऊषा आई
है गुरूद्वारे से गुरू की वाणी भी जगती
चली शर्बरी धीमे धीमे सरकती
अरूण कलगीधर बाँग ऊँची लगाता
उठो सो रहे क्यों चलो मैं जगाता
अजानें निराकार भवनों में लगती
चली शर्बरी धीमे धीमे सरकती

उधर ब्रेड वालो ने आवाज दी है,
पड़ोसी की डेयरी में लाइन लगी है
सुगन्धित अगर गिरिजा घर में महकती,
चली शर्बरी धीमे धीमे सरकती

मेरे लाल अवसर नहीं सोने का यह,
न मौका 'विमल' स्वप्न संजोने का यह
जगे तू सुखद भावना मन में उठती,
चली शर्बरी धीमे धीमे सरकती

कुबेर ने भंडारा करवाया

धन के भंडारी कुबेर ने, भंडारा करवाया
बाल रूप सब देवो को, आमंत्रण दे बुलवाया
बालरूप हनुमान जिन्होंने
सूरज मुख में गटका
बाल रूप श्री कृष्ण ग्वाल
संग कंस पछाड़ा पटका
बालक राम भाइयों संग धनुहीं हाथों में धारे
लम्बोदर गनेश जी माँ गोदी से उतर पधारे
माँ वीणापाणी से विनती
कर वीणा वजवाई
अहंकार जागा धनपति के
मन में खुशी समाई
दस मन लड्डू सहित विविध भोजन की सजी रसोई
लंबोदर की भूख जगी थी पड़ी पेट में सोई
भोजन चट कर डाला
सारा, होने लगा फजीता
तब कुबेर ने अन्नपूर्णा
निकट पहुँच दिल जीता
अन्नपूर्णा माँ ने अपने हाथों भोजन परसा
बाल देवताओं का दल भोजन पा करके हरषा

बालगीत गाइये

बाल गीत बालगीत बालगीत गाइये
बालको में भावनाएं प्रेम की जगाइये
बच्चे हमारे यह भारत की शान है
मोहते स्वरूप, कामनाएं भी समान हैं
बूढ़े शरीरों के जीवन समान है
मेरे तुम्हारे सभी के अरमान है
भावी कर्णधार, इन्हें मन में बसाइये
बालगीत बालगीत बालगीत गाइये
विश्वगुरू भारत के बेटे महान यह
करते सभी के लिए साहस प्रदान यह
प्रहरी बनेंगे यह, मरूथल की सीमा के
बाँके छवीले भी कर्मठ किसान यह
आशिष का मस्तक पे टीका लगाइये
बालगीत बालगीत बालगीत गाइये
सोहन भी आओ, अनीता भी आओ
खड़े क्यों हो तौफीक आ मुस्कराओ
जसवन्त जगतार को भी बुलाओ
बैठो यहाँ सारे हिल मिल के गाओ
विमला मसीहा को भी तो बुलाइये
बालगीत बालगीत बालगीत गाइये

टप टप चुएँ पेड़ से आम

टप टप चुएँ पेड़ से आम
बीनो भइया छोड़ो काम
डन्डे से मत इन्हें गिराना
सोये माली को न जगाना
मीठे रस से भरे रसीले
पके हुए बम्बइयां पीले
कुछ बनारसी गुलाबखासी
बीनो ताजे छुओ न वासी
गूदा मीठा रंग निराला
कुतर रहा तोता मतवाला
बहिना आओ भइया आओ
बीनो खाओ खुश हो जाओ
देखो यह मीठे है चख लो
खा लो या झोली में रख लो
तुमको यहाँ पड़ेगा आना
चूक गये होगा पछताना

बदरी आई बदरी आयी

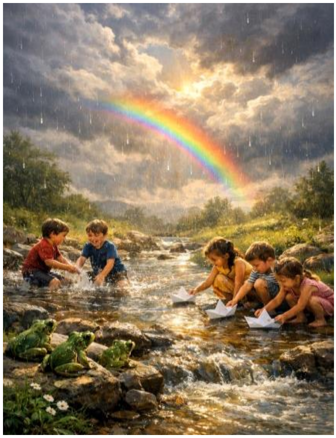

बदरी आई बदरी आयी
नीले आसमान में छाई
धीमी धीमी पड़ती बूँदें
आओ भीगे उछले कूदे
सूरज भी मेघों से हारा
भीग रहा आंचल वन सारा
मेढक का प्यारा टर्रम सुर
झन झन झन झनकारे झींगुर
इन्द्रधनुष के सतरंगे प्यारे
बिखरे नभ में हिल मिल तारे
गलियारे नदियां से बहते
टप टप चोट बूँद की सहते
आओ बहिना आओ भैया
पानी में तैराओ नैया
पानी में छप छप छप खेलें
मजा भीगने का हम लें लें !

पतंग की लूट

लूट लई, भाई लूट लई
दौड़–दौड कर लूट लई
छत पर गिरी पतंग लाल
रंग की आकर के टूट गई
हरे रंग की डोर लगी थी
काले रंग वाली ने काटा
मोनू दौड़ा सोनू दौड़ा
बढ़ा इस तरह झगड़ा झाँटा
छीना झपटी में पतंग
की डोर हाथ से छूट गई
लूट लई भाई लूट लई
लूट मची टकराये सिर से
पापा जी आ गये उधर से
खपड़ी देखी फूट गई
फटी पतंग हाथ ले लौटे
सपने संजोये वह टूटे
वृथा दौड़ की, लूट गई
लूट लई भाई लूट लई

मोनू की टॉफी

मेरी बढ़िया मीठी टॉफी
मम्मी लाती टॉफी काफी
पापा माँगे उन्हें न देती
भैया ललचाये दे देती
माँग उठे जब छोटा सोनू
थोड़ी सी मुँह में रख देती
कहती तुम भी थोड़ी खाओ
मेरी गोद में आ सो जाओ
गाल चूम मीठा ले लेती
और वलैया जी भर लेती
खाओगे मुँह में फँस जाये
सोनू खड़ा खड़ा मुस्काएं
अब तुमको भी नहलाऊँगी
फिर मोनू को टहलाऊँगी

धूप निकली है भाई

आज धूप निकली है भाई
छोड़ो अपनी गरम रज़ाई
मोनू उठा, निकल कर उछला
देखा बाहर हलचल पाई
छोड़ी अपनी गरम रजाई
इतना खुश हो गया कि
उसने खिली धूप में दौड़ लगाई
इतने दिन हो गये कि सर्दी
भगी, न हलुआ पूड़ी खाई
उसके संग इल्ला भी दौड़ा
तकी न उसने खंदक खाईं
सोनू बोला बीच सड़क पर
दौड़ रहे क्या मन में आई
लौटो घर में खेलो खाओ
मम्मी ने जो खीर बनाई
आज धूप निकली है भाई

दीदी का भइया

मेरी पानी की बोतल को
मम्मी भैया छीन रहा है
बड़ी देर से वह जमीन पे
बिखरे कंकड़ बीन रहा है
चाह रहा वह उठा उठा कंकड़
बोतल में लाकर भर दूँ
दीदी की बोतल का पानी
कंकड़ भर–भर गन्दा कर दूँ
छीनू कंकड़ तो यह अपना
मुखड़ा बना मलीन रहा है
कंकड़ जो मुँह में रख लेगा
निगल–निगल यह खा भी लेगा
इसको क्या समझा पाओगी
खा लेगा तो पछताओगी

मम्मी मेरी फ्राक निराली

मम्मी मेरी फ्राक निराली
लाल रंग में सुन्दर जाली
कितने सुन्दर फूल कढ़े है
सच्चे मोती बहुत जड़े है
है किनार पीले रंग वाली
मम्मी मेरी फ्राक निराली
बड़ी देर घर लौटी, आयीं
कितने रूपये दे के लायी
गोटेदार धारियां काली
मम्मी मेरी फ्राक निराली
पहनूंगी मैं रोज इसे अब
मामा घर ले जाना भी तब
इन्द्रधनुष रंगों की लाली
मम्मी मेरी फ्राक निराली
दादी को मैं दिखला आऊँ
पैसे ले मुरमुरिया खाऊँ
कहना मत मैं भोली भाली
मम्मी मेरी फ्राक निराली

आओ आ के बनो बराती

मेरा घोड़ा तेरा हाथी
जुट जाओ, आ बनो बराती
घोड़े पर दूल्हा असवार
हाथी पे दूल्हे का यार
मुन्नी कार उड़ती जाती
जुट जाओ आ बनो बराती
राधा, संगम, पिन्टू चिन्टू
कोमल धीरज बन्टू मिन्टू
सजा खूब मुल्लू का नाती
जुट जाओ आ बनो बराती
खूब भाँगड़ा नृत्य करेंगे
ढपली बजा–बजा लहरेंगे
हँसें बराती साथ जनाती
जुट जाओ अब बनो बराती
सजी धजी दुल्हन लायेंगे
भोपू भी हम बजवायेंगे
बहू न बिल्कुल हो शरमाती । जुट जाओ आ बनो बराती
दुल्हन से मिल प्यार करूँगा हाथ जोड़ सत्कार करूँगा
मुख दिखलाये बिन पैसो के, और गोल गप्पे हो खाती
जुट जाओ आ बनो बराती

समझो केवल मुझे न बच्चा

यह भी अच्छा, वह भी अच्छा
समझो केवल मुझे न बच्चा
तुम न खोल पाते मोबाइल
अंकल को भी कहते चच्चा
यह भी अच्छा वह भी अच्छा
आंटी को चाची कहते क्यों
रोज–रोज खा जाते गच्चा
यह भी अच्छा वह भी अच्छा
मैं चूँसू सन्तरा रसीला
तुम खा लेते केला कच्चा
यह भी अच्छा, वह भी अच्छा
जो टकराये उसे बना दूँ
तोड़–तोड़ बिल्कुल परखच्चा
यह भी अच्छा वह भी अच्छा
नवयुग का रखवाला हूँ मैं
बाल वीर भारत का सच्चा
यह भी अच्छा, वह भी अच्छा
समझो केवल मुझे न बच्चा

गये शेख चिल्ली जापान

गये शेख चिल्ली जापान
भूल गये ले जाना पान
अड्डे पर तो भीड़ बड़ी थी
चील गाड़ियां बहुत खड़ी थी
उड़ने लगा हवा में यान
भूल गये ले जाना पान
पानदान को खूब टटोला
बोला पीछे बैठा भोला
बीबी से पूँछो श्रीमान
भूल गये ले जाना पान
बोले बेगम रखा नहीं है
मेरा गुस्सा चखा नहीं है
दी तलाक दिखलाई शान
भूल गये ले जाना पान
घर लौटे बिन बीबी मिस्टर
बन बैठे खुद ही बैरिस्टर
चेहरा मलिन मिटी मुस्कान
भूल गये ले जाना पान

शेर की दावत

बूढ़ा शेर हो गया उसने अपनी दृष्टि गवाई
दाँतो में भी अब शिकार की क्षमता घटती पाई
सोचा आया पास जीव
उसका शिकार कर डाला
जब मर जाऊँ धर्मराज
से पड़े हमारा पाला
अपने कर्मो की मुक्ति हित दावत एक बुलाई
बूढ़ा शेर हो गया उसने अपनी दृष्टि गंवाई
गाय भैंस बारह सिहों
बकरों को भोज खिला लूँ
दावत में जंगली प्रजा को
न्योत पाप धुलवा लूँ
अंतकाल से पहले जोडू थोड़ी पुण्य कमाई
बूढ़ा शेर हो गया उसने अपनी दृष्टि गंवाई
दावत में कुछ कुत्ते आये
कुछ आये थे घोड़े
रंगे सियार शेर. ने घुटने
जिनके दौड़ा तोड़े
तू तू मैं मै शुरू हुई व दौर लोमड़ी लाई

बूढ़ा शेर हो गया उसने अपनी दृष्टि गंवाई
देख रहा था शेर थी
उसकी कमजोरी लाचारी
पुण्य कमाने चला मगर
हो रहा पाप था भारी
कैसे स्वागत हो मेहमानों का थी फिक्र सताई
बूढ़ा शेर हो गया उसने अपनी दृष्टि गंवाई
बिन खाये मेहमान
वहाँ से सटक चले कुछ भूखे
हरी घास कुछ चरे,
अधिकतर हाड चचोड़े सूखे
अंतकाल में गति दावत से हो न सकी भरपाई
बूढ़ा शेर हो गया उसने अपनी दृष्टि गंवाई

अन्नू पन्नू और साधु

ताप रहे सब आग,
कोहरे ने जब डाला डेरा
दो साधू आ गये गली
में लगा रहे थे फेरा
अन्नू पन्नू गरम समोसा
खाने को जब टपके
भीगी हुई जटाओं वाले
साधू भी आ लपके
साधू बोले हमें खिलाओ
यहाँ समोसे लाकर
नहीं नहाना तुम्हें पड़ेगा
नदी किनारे जाकर
सर्दी का यह सितम
ठिठुरते देखो कैसे बन्दर
बोला पन्नू इसी लिए
हूँ पड़ा रजाई अन्दर
साधू बाबा बोले आओ,
उठकर दौड़ लगाओ

मम्मी से हलवा बनवाओ
खाओ, हमें खिलाओ
अन्नू बोला तुम भी दौड़ो,
साथ हमारे आकर
अभी खिलाता तुम्हें समोसे
मम्मी से बनवाकर

छाता लेकर निकली रानी

बड़ी जोर से बरसा पानी
छाता लेकर निकली रानी
कहने लगी चलूँ स्कूल
पढ़ने जाऊँ, करूँ न भूल
पीठ पे लादा बस्ता भारी
मिल पाई, कोई न सवारी
रोड किनारे पैदल चल दी
विद्यालय पहुँचू, थी जल्दी
हवा तेज, बूँदे थी पड़ती
ठंड बढ़ी थी, रगें अकड़ती
उलट गया जब हवा में छाता
सोचा, अब क्या करें विधाता
भीगी बुकें सड़क पर फिसली
असुभ समय घर से मैं निकली
रैनी डे था हो गई भूल
आज न जाना था स्कूल
मोबाइल से काल मिलाती
उचित जानकारी मिल जाती
मौसम का रखना था ध्यान
बुकें भीगती ना सामान

लाया ताजा गोल टमाटर

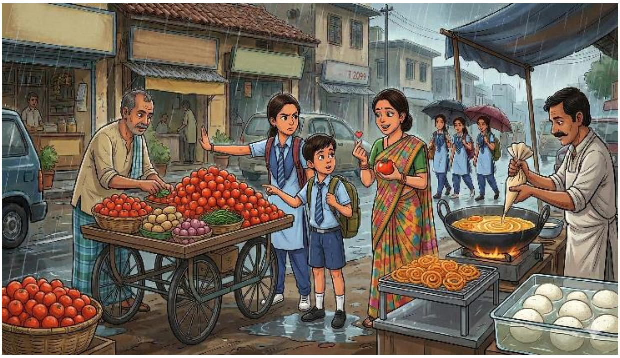

सब्जी वाला सब्जी लाया
लाया ताजा गोल टमाटर
भोलू भैया आया, पूँछा
किस कीमत का गोल टमाटर
सोनी दीदी आयी बोली
क्यों पूँछे तू मोल टमाटर
मुझे नहीं भाता खाने में
रोज रोज का गोल टमाटर
दूध जलेबी अच्छी लगती
तुझको भाये, गोल टमाटर
मम्मी पैसे इसे न देना
यह ले लेगा गोल टमाटर
दूध जलेबी या रसगुल्ले
ले लो मत लो गोल टमाटर
मम्मी बोली, लाड़ो मेरी
खून बढ़ाता गोल टमाटर
सब्जी भी यह फल भी सुन्दर
स्वाद अनूठा गोल टमाटर

दंगा मल का दंगा

दंगा मल दंगा करवाने में माहिर हुशियार
दंगा करवा देते उससे खूब बढ़ा व्यापार
एक दिवस मंगामल
उनके पास शिकायत लाये
बन्दर करते परेशान
कुछ करो जो उन्हें भगाये
स्थिति को हम भांपे पहले, मंगामल से बोले
टोपी चश्मा लगा उठ चले, छड़ी हाथ में तौले
बन्दर थे चालाक दूर
से परखा मिस्टर आते
ऊँची नीची जगह
उचकते कंधे धक्के खाते

बना निशाना एक बन्दर ने, चश्मा उनका छीना
छड़ी रहे फटकार कशमकश में उठ रहा पसीना
गुस्साये फल विक्रेता
से केले लाये चार
तुम्हें तमाशा दिखलाता हूँ
पैसे करो उधार
एक–एक कर सभी दिशाओं में फेके जब केले
दौड़े बन्दर लगे झगड़ने बड़े बड़े अलवेले
दंगामल के हाथ लगा
तब उनका टूटा चश्मा
अन्टू बन्टू हँस–हँस
देखे इतना बड़ा करिश्मा

कहलाता खरगोश

छोटा जीव दौड़ता तेजी से उचकाकर कान
कहलाता खरगोश जो डर से छिपे बचाता प्रान
कुत्ते जब शिकार करने को पीछे दौड़ लगाते
घुस जाता यह अपनी बिल में नहीं पकड़ वह पाते
एक बार नीलू ने उसकी देखी दौड़ निराली
सड़क किनारे दोनों साइड भरी हुई थी नाली
बरसा के पानी से खेतों में बह चले पनारे
बिल से निकल सड़क आ पहुँचा सोचा समय गुजारे
मोटरसाइकिल एक अचानक बीच सड़क पर आयी
लगा भागने खरहा दौड़ा उसको दिया दिखाई
एक जगह सूखी जमीन में गया खेत के अन्दर
खेत और खलिहान भरे पानी से बने समन्दर
ताली रहा बजाता नीलू छत से देख नजारा
हँसते और खेलते काटा उसने वह दिन सारा

कउए ने पतंग उड़ाई

कउए के संग उड़ा कबूतर, बगुला देख लजाए
थोड़ा सा उड़ पाये, बगुला कीड़े बीने खाएं
एक दिवस चर रही भैंस
की पीठ बैठ कर कौआ
सैर कर रहा, पास आ गिरा
कटी डोर कनकौआ
लम्बी डोर फँसा कौए का पंजा उसे लपेटा
कौआ उड़कर चला, कबूतर को भी साथ समेटा
रहा उड़ाता आसमान में
कौआ कटी पतंग
देख करिश्मा लोग खुशी
से चकित, रह गये दंग
कनकौआ फट गया उसे जब लगा हवा का झटका
रहा देखता बगुला कौआ रह–रह मन में खटका
बड़ी देर में छत से उतरा
बन्टू देख नजारा
मिन्टू से कह उठा कि
देखा, मजा उठाया सारा

बाल खिलौने

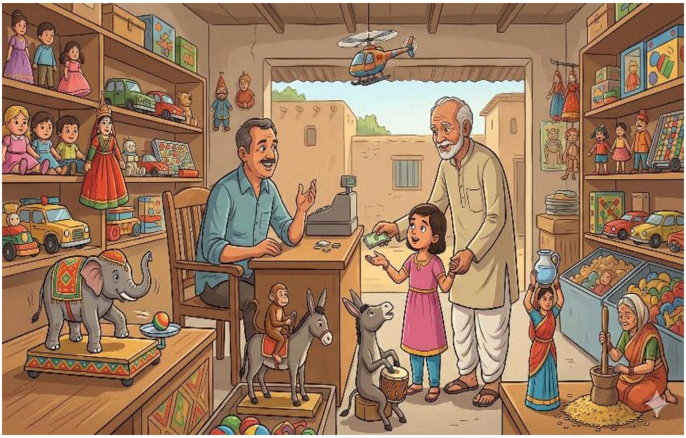

बाल खिलौने, बाल खिलौने
बड़े सुहाने सुन्दर लोने
रूबी अपने दादा के संग
पहुँची एक दुकान
सजे खिलौनो के पुल बाँधे
मालिक करे बखान
झूम झूम मस्ताना हाथी
सूँड से फेरे लट्टू
चाबी भरते ही बन्दर
दौड़ाने लगता टटटू
हेलिकाप्टर उड़ता
रूबी, देख हुई हैरान
गदहा बजा बजा ढोलक
पे छेड़ रहा था तान
मटकी सिर पे रखे
गुजरिया नाचे गये गान
और ओखली में मूसल

से बुढ़िया कूटे धान
रूबी की जिद देखी
दादा दिये रूपया साठ
एक खिलौना ले लो
बेटा ढीली करो न गाँठ

बादल आया, बादल आया

बादल आया बादल आया
ठंडी हवा साथ में लाया
कहो पतंग उड़ाये कैसे
निकले घर से जाये कैसे
ओले बोल उठे गड़गड़गड़
बिजली तड़प रही कड़ कड़ कड़
कौंधा कोंध रहा लप लप लप
मोनी सोंचे करूँ झपाझप
मम्मी से झपटे कुछ पैसे
छाता खोला उसने जैसे
हवा चली दरवाजा फेरा
पानी की बौछार ने घेरा
छाता उलटा, रपटी हारी
उल्टी लौट पड़ी बेचारी
बोली मम्मी मुझे बचाओ
बादल को वापिस लौटाओ
करूँ झपाझप डाँट पड़ी थी।
दरवाजा क्यों खोल खड़ी थी।

चाँद पर सैर

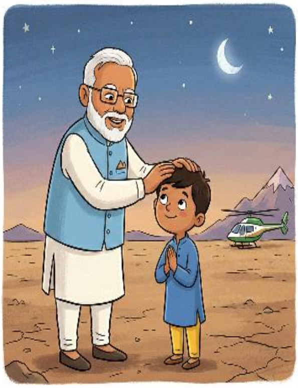

A Moment of Hope

Reaching for the Stars

चाँद पर सैर करने को
क्षितिज घर से निकल भागा
तो मोदी जी से उसने
जाके हेलिकाप्टर माँगा
कहा आशीष का एक
हाथ सिर पर मेरे रख दीजै
मै मामा के यहाँ दावत
उड़ा आऊँ कृपा कीजै
कहा मोदी ने दावत
खाने बेटे भेजतो दूँगा
मगर जो माल लाओगे
उसे संग्रह में रख लूँगा
सुनो तुम एक मेरी बात
राकेट ही उड़ाना है
चाँद मामा के घर जा
मौज लेना लौट आना है
चाँद पर सैर की उसने

मजा लूटा समय काटा
नदी नाले पहाड़ों पर
था बिखरा घोर सन्नाटा
कहा मामा से जल्दी लौट
कर लोगों को लायेंगे
हम अपने मोदी जी से कह, सुखद बस्ती बसायेंगे
तिरंगे को वहाँ फहराया उसने चाँद पर जाकर
वहाँ की मिट्टी पत्थर और कंकड़ को दिया लाकर

नदी किनारे लगी फसल

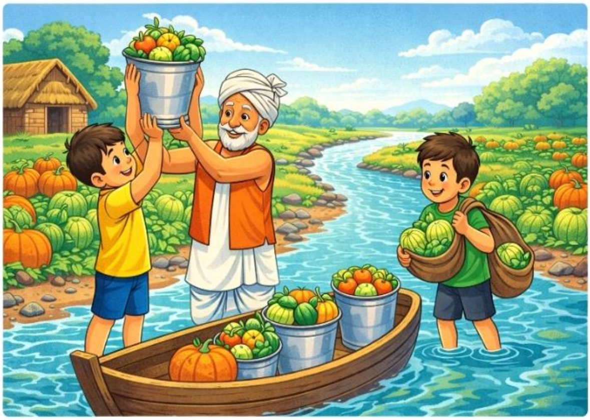

नदी किनारे लगी फसल
में खरबूजों की बेल
बन्टी बोला, शन्टू करले
रखवाले से मेल
खरबूजे तरबूजे होते है
कितने अनमोल
बिन पैसे मिल पाये
जभी हम बोले मीठे बोल
रखवाला झोपड़ी डालकर
रहता नदी किनारे
नाव लाद बेचने फलों को
ले जाता बाजारे
शन्टू बोला बोल कि अंकल
बड़ी मशक्कत करते
पीठ लाद खरबूजे तरबूजे
नौका में भरते
कठिन दिखाई देता

काका बोझ उठाना भारी
रोज रोज आ जाऊँगा
मैं करने मदद तुम्हारी
अंकल बोले अच्छा बेटे
तू तरबूजा खा ले घर ले जाना कुछ
खरबूजा तू थैले में डाले सेवा भाव दिखाया अंकल
को बोझा उठवाया और फलों को लाकर
भाई बहनों को खिलवाया

मदारी और बन्दर

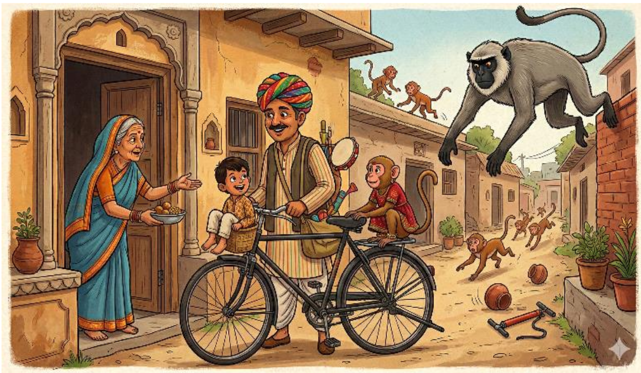

एक मदारी साइकिल
पर बैठाये एक बन्दरिया
आगे की गद्दी पर
बालक बैठा ओढ़ चदरिया

बोले जय बजरंग वली की, दिवस आज मंगल का
तय करके आया वह रास्ता छोटे से जंगल का
माँग माँग गुड रोटी
पैसा झोली भरता जाये
बन्दरिया को देख निकल
जंगल के बन्दर आये
बालक को थोड़ा–गुड़ देता भूखी रहे बन्दरिया
होकर खड़ी माँगने लगती हिला हिला घांघरिया
दशा देख कर उसकी दौड़े
बन्दर आये सारे
करने लगे प्रयास बंदरिया
छुड़वा छुड़वा हारे
डरा मदारी बन्दर सेना देख देख घबराया

तभी मदद को उसकी एक लंगूर कहीं से आया
काला मुँह लंगूर देखकर सटक गये सब बन्दर
चने खिलाकर उसे सुरक्षित आगे बढ़ा कलन्दर

मम्मी लल्ला बुला रहा है

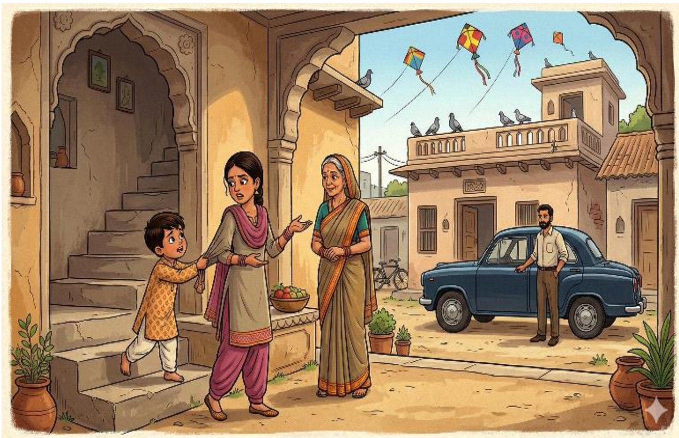

मम्मी लल्ला बुला रहा है।
पहले हिला हिला सिर अपना,
अब हाथो को हिला रहा है।
मम्मी लल्ला बुला रहा है।
जीने पर चढ़ने की कोशिश
करता मम्मी दौड़ दौड़कर
मुझे खींचता जीने ऊपर
मेरी उँगली पकड़–पकड़ कर
तेजी से ऊपर को चढ़कर
मुझको भी तो गिरा रहा है।
मम्मी लल्ला बुला रहा है।
यह भी चाह रहा मुंडेर पर
बैठे हुए कबूतर देखूँ
नभ में जो उड़ रही पतंगे
उनकी सर सर मर मर देखूँ
गिर न जाय यह खींच तान में
भैया मुझको डरा रहा है।

मम्मी लल्ला बुला रहा है।
मम्मी इसे बुलो लो, बोलो
आओ बेटा चीज दिलायें
पापा कार जा रहे लेकर
नानी के घर, आओ बिठायें
गोले बना बना दिखलाये,
हवा में उँगली घुमा रहा है।
मम्मी लल्ला बुला रहा है।

गुन गुन जी

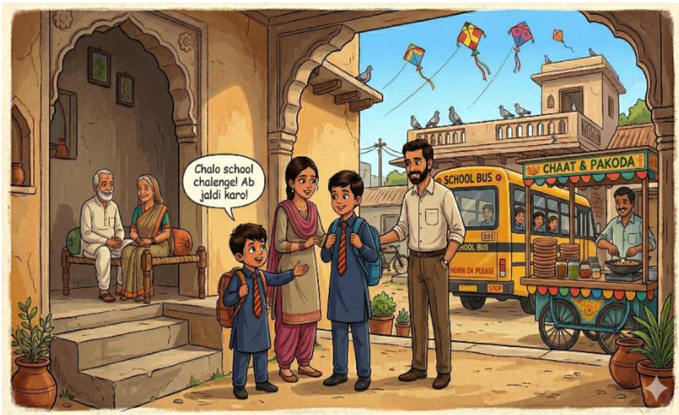

बड़े हो गये गुनगुन जी
खड़े हो गये गुनगुन जी
जब जाते हैं पढ़ने आप
खुश हो जाते अम्मा बाप
दादी को तुम अच्छे लगते
रोज सवेरे जब तुम जगते
बाबा जी को ज्यादा भाते
चुरूर मुरूर मुरमुरियां खाते
भइया कहता चल स्कूल
पढ़ने में मत करना भूल
टाई लगा टांग ले बस्ता
चल खाये आलू के खस्ता
पढ़कर जब घर आयेंगे
अपना पाठ सुनायेंगे
मम्मी खुश हो जायेगी
हलवा, खीर खिलायेंगी

जामुन काले बड़े निराले

जामुन काले बड़े निराले
भौरे इन पर है मतवाले
गूदा मीठा इनका लगता
मिश्री में जैसे हो पगता
कितने अच्छे हैं रस वाले
जामुन काले बड़े निराले
खाते जब पक जाते चूते
खाकर बढ़ जाते बल बूते
यह स्वादिष्ट बड़े गुणवाले
जामुन काले बड़े निराले
कैसे अच्छे लगते यह फल
धोता इनको वर्षा का जल
झोली में बच्चे हैं डाले
जामुन काले बड़े निराले
पिन्टू खाये बब्लू खाये
गुड़िया के मन को यह भाये
खाते बच्चे भोले भाले
जामुन काले बड़े निराले

कितना मीठा लाल अनार

कितना मीठा लाल अनार
गुथा मधुर दानों का हार
कुतर रहे हैं मिट्ठू लाल
फल से रस को रहे निकाल
स्वाद मधुर रस भी भरपूर
बच्चों खड़े हुए क्यों दूर
आओ तोड़ो, डाल हिलाओ
पके फलों को बीनो खाओ
फल ईश्वर ने किया प्रदान
बच्चे खायें हो बलवान
सभी फलों में ऊँची शान
पेट दर्द का करे निदान
अच्छा छोड़ो, शेष कहानी
जूसर से निकाल लो पानी
रखना सभी फलों से प्यार
पर न भूलना लाल अनार

नाचो मोर

घटा घिरी अब नाचो मोर
बादल बरसेगा घनघोर
मोरी पंखों को सहलाये
नृत्य करे जो मन को भाये
ध्वनि गूँजी, बन वीथी शोर
घटा घिरी अब नाचो मोर
भीगी छत भीगी मुंडेर
पर छितराओ करो न देर
घूम घूम नाचो चितचोर
घटा घिरी अब नाचो मोर
हरी घास ने चूनर डाली
मन मोहे वन की हरियाली
घिरे हुए बादल चहुँओर
घटा घिरी अब नाचो ओर
फूले फूल लतायें फूली
इन्द्रधनुष रंगता रंगोली
अमर बेलि चोरे मन मोर
घटा घिरी अब नाचो मोर

नये साल में बजा

नये साल में, बजा उठे
चूहे चिलबिलिया बाजा
चूहों की संगीत सभा में
पहुँचे बिल्लू राजा
देखा उसने सारे चूहे
बजा रहे थे सरगम
सारे गा मा सुन
उसकी भी चाल हुई थी कम
काँपे चूहे उसे देखकर
भूल गये वह गाना
सहम उठे सब टूट गई
लय, बेसुर हुआ तराना
बिल्लू को देखा टीटू ने
चुपके दौड़ा आया
बड़े जोर से भौंक बिलौटा
उसने दौड़ भगाया
चूहे फिर से उसी राग
में सरगम लगे बजाने
नये वर्ष की खुशियों में
वह गाने लगे तराने

चिड़ियां उड़ती जाती है

चिड़ियां उड़ती जाती है
न जाने क्या गाती है
चींचीं चूँ चूँ चूँ चूँ चींचीं
मीठा गीत सुनाती है
चिड़ियां उड़ती जाती है
न जाने क्या गाती है
बड़े सवेरे छत के ऊपर
आती हमें लुभाती है
इस मुंडेर से उस मुंडेर
पर फुर्र फुर्र उड़ जाती है
चिड़ियां उड़ती जाती है।
न जाने क्या गाती है
जब हम उन्हें बुलाते
वह तो उचक उचक बल खाती है
हरे पेड़ की फुनगी पर
उड़ बैठ बहुत मन भाती है
चिड़ियां उड़ती जाती है
न जाने क्या गाती है

बन जाते हम कूद के

देखो पापा हम तो धावक
बन जाते हैं कूद के
रूठे हम तुम हमें मनाते
मन जाते हम कूद के
खेल हमें अच्छे लगते हैं
खेल खेल में पढ़ना भी
डाँट डपट से तो गुस्से में
सन जाते हम कूद के
घबराते हम नहीं काम से
आप हमें बतलाते जो
झिड़की से हम नाराजी
भी दिखलाते हैं कूद के
चोर सिपाही खेल खेलते
छिप जाते हैं कमरे में
तुम पुचकार बुलाते हमको
आ जाते हम कूद के
मम्मी हमें बुलाती कहती
आओ दूध पियो आकर
लिपट चिपट दिखलाने
अपनापन जाते हम कूदकर

गुड्डे की सगाई

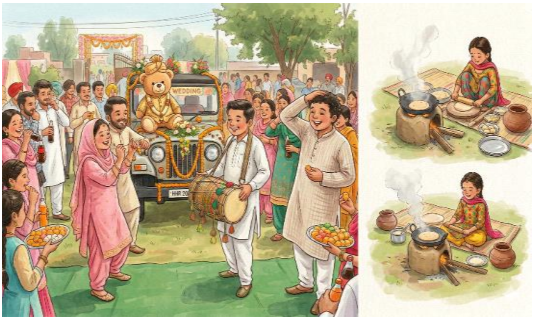

हरी घास के हरे बिछौने
पर आओ हम खेले खेल
रखो कढ़ाई अब चूल्हे पर
पाटे पर लो पूड़ी बेल
गुड़िया की गुडडे के संग
में होनी आज सगाई है
सजी कार उसमें बारात
गाजे बाजे से आई है
अन्टी नाचे अंकल नाचे
नाचे बूढ़ी नानी है
बाबा लगे भाँगड़ा करने
आई लौट जवानी है
नाना बोले ताक धिनाधिन
लाओ मुझे बजा दूँ ढोल
ठंडा पीकर हँसे बाराती
कहने लगे खुल गई पोल
ताली देकर कहे जनाती
गंजे सिर से टपके तेल
दूल्हे ने दहेज जो माँगा
निभ न सके दुल्हन से मेल

तुम्हें मानना सदा बड़ों का कहना

सुबह चहकती चिड़ियां
तब माता जी मुझे जगाती
रात्रि काल सोने से पहले
लोरी दे थपकाती
जो चीजे मुझको पसन्द
मम्मी जी मुझको देतीं
जब लग जाये नजर
अचानक तुरत बलैया लेती
भाई–बहिना रहो प्रेम
से ज्ञान यही सिखलाती
सबको एक समान समझने
बाली राह दिखाती
नित्य मुझे विद्यालय पढ़ने
माता भेजा करती
थोड़ा भी विलम्ब हो जाता
माता मन में डरती
मेरी माता मुझे सिखाती
सदा प्रेम से रहना
कहती बेटे तुम्हें मानना
सदा बड़ों का कहना

स्कूल चलो, स्कूल चलो

स्कूल चलो, स्कूल चलो
प्यारे बच्चों स्कूल चलो
विद्यालय से मत घबराना
अनपढ़ कह लोग न दे ताना
बगिया के कोमल फूल चलो
स्कूल चलो, स्कूल चलो
तुम पढ़ों देश का मान बढ़े
गौरव गरिमा सद्ज्ञान बढ़े
सद्भावों के अनुकूल चलो
स्कूल चलो, स्कूल चलो
तुम बनो सूर्य समय प्रभापुंज
होगा तुमसे अज्ञान लुंज
आ जाओ बाल समूल चलो
स्कूल चलो स्कूल चलो
तुम हो सैनिक युग सेनानी
हो देश धर्म के बलिदानी
अवरोधों के प्रतिकूल चलो
स्कूल चलो स्कूल चलो
शिक्षा पाकर आगे बढ़ना, उन्नति के शिखरों पर चढ़ना
मत रूको चलो स्कूल चलो, स्कूल चलो स्कूल चलो

स्वच्छ रहे अपना घर आंगन

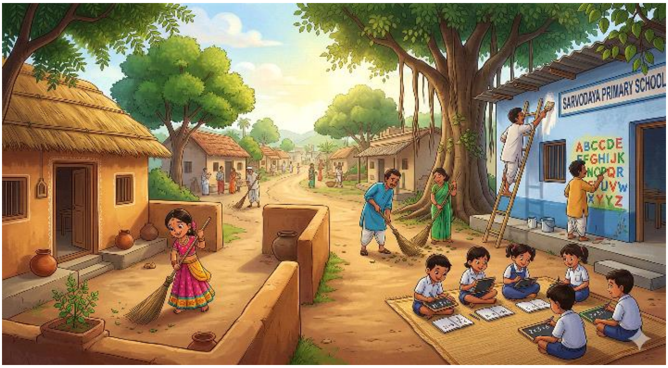

स्वच्छ रहे अपना घर आंगन, स्वच्छ रहे अपना परिवेश
स्वच्छ हमारा विद्यालय हो इसका रखना ध्यान विशेष

वातावरण स्वच्छ हो अपना
स्वच्छ वायु का ले आनन्द
लिखें स्वच्छ, फिर स्वच्छ कला
की करे रंगाई हो सानन्द

स्वच्छ हमारी गतिविधियां हो, स्वच्छ पाठशाला में वेश
स्वच्छ हमारा विद्यालय हो इसका रखना ध्यान विशेष
अंकन करे गणित के अंकों
का वह भी हो स्वच्छ सृजन
नीरसता हो दूर पाठ का
स्वच्छ चित्त से करे मनन
अस्वच्छता न रहे कदाचित, मिले न किंचित उसे प्रवेश
स्वच्छ हमारा विद्यालय हो इसका रखना ध्यान विशेष
घर में सहित विछावन
सारे कपड़े स्वच्छ हमारे हो
सुन्दर स्वच्छ वेश भूषा में

हम सब लगते प्यारे हो
हो स्वच्छता पुजारी जब हम तभी सुखद हो भारत देश
स्वच्छ रहे अपना घर आंगन स्वच्छ रहे अपना परिवेश

तितली

रंग रंगीली न्यारी तितली
लगती प्यारी प्यारी तितली
फूलों पर उड़ती इठलाती
दूर देश हो आती जाती
कभी न थकती हारी तितली
लगती प्यारी प्यारी तितली
कली कली को चूम रही है
मस्त हवा में झूम रही है
फिरती बन बन मारी तितली
लगती प्यारी प्यारी तितली
सुन्दर कितने प्यारे पर है
रंगों में भी न्यारे पर है
डोल रही सुकुमारी तितली
लगती प्यारी प्यारी तितली
मुख चमकीला बदन सलोना
सजा रूप से कोना कोना
प्रभु ने खूब निखारी तितली
लगती प्यारी प्यारी तितली

झरने नीर झरा करते है

झरने नीर झरा करते है
सबकी प्यास हरा करते है
गिरवर खण्डों से टकराकर
वन उपवन में गिरते झर झर
दर्पण जैसे स्वच्छ नीर से
सूखे खेत भरा करते है
कल–कल–छल–छल पग–पग उच्छ्वल
प्रति पल बढ़ते जाते अविरल
भू की कोख हरी करने को
शिखरों से उतरा करते हैं
बूँद–बूँद अमृत के जैसा
जल देते हमको बिन पैसा
सरिताओं से मिल उनके
तटबन्धों को गहरा करते है
परहित में यह देते पानी
युगों युगों से यही कहानी
प्यास बुझाने को दुनियाँ की
धरती पर छहरा करते है

लौट-लौट आ जाती ठंड

लौट–लौट फिर आती ठंड
आँख मिचौली करती फिरती
सूरज को भरमाती ठंड
तालाबों में दूर देश से
पक्षी लेकर आती ठंड
घर के भीतर तेज हवा के

संग अंदर आ जाती ठंड
कँपा कँपा कर बूढ़ी दादी
पर भी सितम ढहाती ठंड
दादा बाहर निकल न पाये
उनको बहुत सताती ठंड
रिंकी पिंकी शन्टू वन्टू
से बढ़ हाथ मिलाती ठण्ड
टोपा मफलर स्वेटर जर्किन
मजबूरन पहनाती ठंड
सर्दी की छुटटी पड़ने पर
नानी घर ले आती ठंड
लौट–लौट फिर आती ठंड

प्रातः काल टहलना बच्चों

प्रातः काल टहलना बच्चों
नई ताजगी लाता है
फूलों की सुवास से तन–मन
आनन्दित हो जाता है
बागों में प्यारी चिड़ियों के
सुनते है हम मीठे बोल
तालाबों में तैर तैर कर
बतखें करती सुखद किलोल
उत्तम समय यही होता है
नव स्फूर्ति जगाने का
इसके बाद नाश्ता करने
का, विद्यालय जाने का
हमें चाहिए सुबह सवेरे
नित्य टहलने हम जायें
शौच कार्य से हो निवृत्त
हम काम जरूरी निपटायें
जिन बच्चों ने सुबह जाग
जाने का नियम बनाया है
भाग्य जगाया उन बच्चों ने
सुख समृद्धि को पाया है

पोलियो उन्मूलन अभियान

पोलियो उन्मूलन अभियान
लगाओ इसमें अपना ध्यान
छूत की बीमारी है बुरी
यह छोटे बच्चों में पसरी
पिलाओ दवा छोड़ अज्ञान
पोलियो उन्मूलन अभियान
पोलियो से शिशु बने अपंग
मरोड़े इसने उनके अंग
दवा की बूँदे कवच समान
पोलियो उन्मूलन अभियान
पूतना सी यह डोल रही
विपति इसके कारण जो सही
पिलाओ दवा न खोओ ज्ञान
पोलियों उन्मूलन अभियान
लड़कियां लड़के हम सबके
उतारो दवा पिला सदके
फूँक दो एक नई सी जान
पोलियो उन्मूलन अभियान

प्यारा भारत देश

हम बच्चों का न्यारा सबसे
प्यारा भारत देश
यद्यपि भिन्न–भिन्न भाषाएं
भिन्न भिन्न है वेश
भाई बहिन सभी जगवासी
संजोये अभिलाषा
मेल मिलाप एकता ही
निष्ठा अपनी परिभाषा
अपनी ध्वजा तिरंगा है
जिसका सम्मान विशेष
प्रगतिशील पथ अनुगामी
हम है स्वराष्ट्र के नायक
मातृभूमि के हम रक्षक
जन गण मन के उन्नायक
शान्ति अहिसां का सदैव
जग को देते सन्देश
हम सब न्यारे न्यारा
अपना प्यारा भारत देश

बादल बरस बरस झर झरते

कैसे नभ में पेंगे भरते
बादल बरस बरस झर झरते
देखो अँधियारी ले आये
उमड़े घिर घिर नभ में छाये
पक्षी ठिठुरे पंख छिपाये
पाँखों में है चोंच दबाये
कोलाहल सा करते फिरते
बादल बरस बरस झर झरते
अंधड़ चला पड़े कुछ ओले
पत्तों से लग खड़ खड़ बोले
शाखाएं खाती हिचकोले
अमियां टकरा–टकरा डोले
कजरारे गड़गड़गड़ करते
बादल बरस बरस झर झरते
मम्मी दूध कह उठी माला
आया नहीं आज क्यों ग्वाला

लगता भरा गाँव का नाला
बरस उठा जो बादल काला
'विमल' झमाझम झूम बरसते
बादल बर बरस झर झरते

बसन्ती वायु में पिन्टू

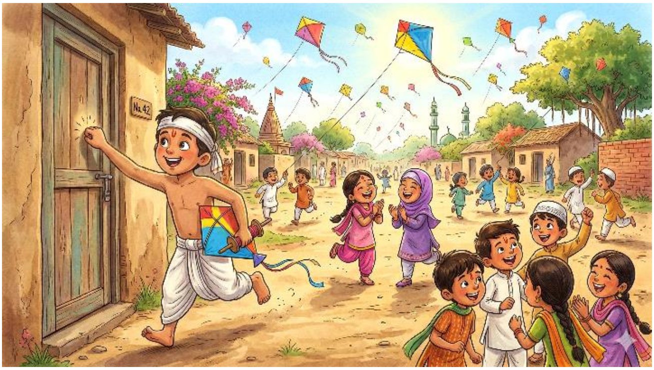

बसन्ती वायु में पिन्टू गया, साथीगणों के घर
कहा आओ पतंगे हम उड़ा ले आज जी भर कर
समीरण हो रहा था और
उजाला धूप से फैला
किरण पुंजो से टकराकर
कुहासा हो उठा मैला
हुए एकत्र सब बच्चे कुलाँचे भर रहे जम कर
बसन्ती वायु में पिन्टू गया साथीगणों के घर
मदन सुषमा सरोजा
ऋतु रशीदा आन कर बोली
चलो अब खेल के मैदान में
और ले बना टोली
पतंगों की करें प्रतियोगिताएं आज डट डट कर
बसन्ती वायु में पिन्टू गया साथी गणों के घर
हरी नीली पतंगे, लाल
उड़ सरपट चली जाये
कभी नभ सीध में उड़ती
कभी वृक्षों को छू जाये
गिरे नीचे कि लगता, कर रहा कोई कला नटवर

बसन्ती वायु में पिन्टू गया साथीगणों के घर
कभी डोरी से डोरी की
रगड़ देती है एक झटका
कि लगता मल्ल कुश्ती
लड़ रहे नभ में उठा पटका
बजाये तालियाँ बच्चे प्रफुल्लित हो रहे हँसकर
बसन्ती वायु में पिन्टू गया साथी गणों के घर

डब्लू की मित्रता

लाला बदलराम के यहाँ पहुँचे जब मेहमान
मीठे वचनों सहित मिला था उन्हें बड़ा सम्मान
प्यारे राम बुजुर्ग, जिन्हें प्यारे थे बच्चे
बच्चों जैसी बातें बच्चों जैसे सच्चे
सोचा दिन दो चार शहर में हो आयेंगे
इधर उधर की रौनक देखे, हरषायेंगे
बच्चों की पसन्द के लाला, बेचे कम्पट टाफी
चाय पकौड़ी की दुकान थी बेचा करते काफी
पोता था शैतान नाम डब्लू लाला का
बड़ी बहू का लाड़ भरा सुत शशि वाला का
हुई मित्रता प्यारे राम सहित डब्लू की
सात वर्ष का, कथा सुन रहा था भालू की
लाया बिस्कुट, लाला जी को खूब खिलाये
दोस्ती की लाला ने खाये और मुस्काएं
लगे निकाल तम्बाकू को डिबिया से मलने
डब्लू को डिबिया भायी वह लगा माँगने
बोला हमको यह डिबिया दे दीजै लाला
नजर बचायी लगे तुरत सरकाने माला
डब्लू ने सोचा विचार यह ठीक नहीं है

टाफी बिस्कुट खिला दी भीख नहीं है
खिसिया उसने सिर पर उनके मारा चाँटा
कन्धे पर चढ़, लाला जी को उसने काटा
हुई मित्रता भंग हुआ गड़बड़ घोटाला
'विमल' मामला शशिवाला ने पहुँच सँभाला

बसन्ती वयारों का उपहार लाया

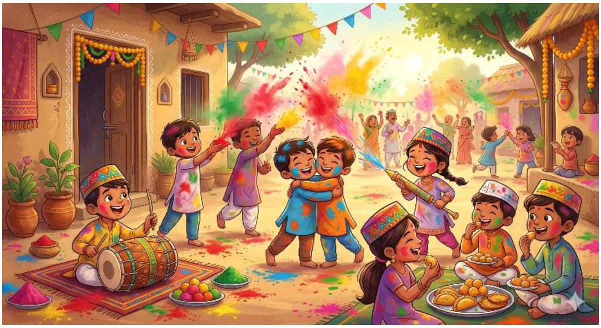

उछल कूद बच्चों ने कैसी मचाई
हुए खुश खुशी उनके दिल में समाई
पड़ी छुट्टियां रंग भरा पर्व आया
बसन्ती वयारों का उपहार लाया
सुशीला सहित सोनू मोनू बड़े खुश
सभी हँस रहे हँस के ताली बजाई
हुए खुश खुशी उनके दिल में समाई
सुबह झूम उठते व आलस है करते
दोनों मुट्ठियाँ वे रंगों की है भरते
चढ़ाते नया अन्न होली पे जाके
भुनाते उसे जा बनाते हैं लाई
हुए खुश खुशी उनके दिल में समाई
नहीं पीते काफी न टॉफी है खाते
विविध भाँति के रंग है मोल लाते
भरे झोलियों में अबीरों की थैली
गुलालों से गालों में लाली लगाई
हुए खुश खुशी उनके दिल में समाई
रंगी रंग भरी उनकी पिचकारियां है
सभी के सिरो पर रंगी टोपियां है
उड़ाते हुए रंग की बौछारे फिरते

लगे रंग की बरसात उनको सुहाई
हुए खुश खुशी उनके दिल में समाई
रंगे पहले फिर पास अपने बिठाते
गले से लगाते मिठाई खिलाते
परस्पर हँसे प्यार कर मुस्कराते
कहीं थाप ढोलक की पड़ती सुनाई
हुए ख़ुश खुशी उनके दिल में समाई

बच्चों गीत प्यार के गाये

हम विकास के दीप जलाएं
बच्चों गीत प्यार के गायें
अंतर्मन की पीड़ा हर लें
अपना जीवन ज्योतित कर लें
आ जाओ तम दूर भगाएं
बच्चों गीत प्यारे के गाये
गली–गली से मिटे अँधेरा
कलुषों का उठ जाये घेरा
आओ जगमग जग दमकाएं
बच्चों गीत प्यारे के गाये
गाँव नगर में हो दीवाली
मुखड़ों पर खुशियों की लाली
आशाओं की किरण जगाये
बच्चों गीत प्यार के गाये
धरती से नभ को प्रकाश दे
चन्दा सा उन्मुक्त हास दे
आओ मन पुलकित मुस्काएं
बच्चों गीत प्यारे के गाये
अन्धकार स्वयमेव भगेगा/सुप्त पड़ा सौभाग्य जगेगा
आओ दीपावली मनाएं, बच्चों गीत प्यार के गाये

पहेलियां–१

मधु का लोभी कौन
रखा करती फूलों से नाता
भन–भन करता, उड़ता
फिरता दल सबको डरपाता

आसमान में हवा संग
जो उड़ ऊँचा बलखाती
सर–सर की ध्वनि करती
किसकी पूँछ लहर लहराती

काले बादल में गड़ गड़
की ध्वनि से कौन डराता
टप टप गिर जमीन पर
सिहरन दे सबको सिहराता

पके खेत में बच्चों वह तो
धीरे से घुस जाती
बढ़ती जाती पकी फसल को
कतर–कतर खा जाती

काँटे खुबरों से बच्चो वह
रक्षा सबकी करते
एक साथ रहने का दोनों
बच्चों दम है भरते

पहेलियां-२

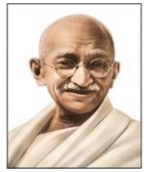

बच्चों अपना देश कराया
किसने था आजाद
राष्ट्रपिता कहकर तुम सब
जिसकी करते हो याद

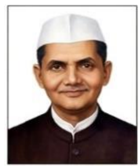

जय किसान जय जय किसान
के नारे वाला कौन
थे प्रधानमन्त्री भारत के
बोलो क्यों हो मौन

प्रियदर्शिनी बताओ किसका
नाम उचारा जाता
जिसकी कुर्बानी को अब
भी बच्चा, बच्चा गाता

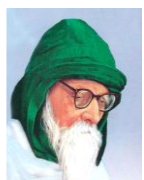

भूमिहीन कृषकों को किसने
भूमि दिलाई बोलो
छिपा रखा हो नाम कहीं
तो अपना हृदय टटोलो

बतलाओ किस देश भक्त ने
कहा खून मैं लूँगा
बदले में दुर्लभ आजादी
जीत तुम्हें मैं दूँगा

श्याम बाबू शुक्ल 'विमल'

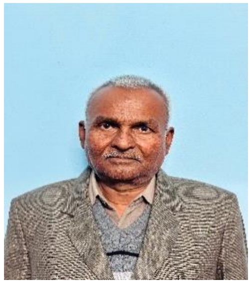

जन्मतिथि :–(10–04–1954) दस अप्रैल उन्नीस सौ चौवन ई0

पिता का नाम :– स्व0 दुर्गा प्रसाद शुक्ल

जन्म स्थान – शहीद ग्राम मुजफ्फरनगर, तहसील–पूरनपुर

जनपद–पीलीभीत (उ0प्र0)

शिक्षा–बी0ए0, बी0टी0सी0, अदीब कामिल (जामिया उर्दू अलीगढ़)

भाषा ज्ञान–हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, गुरूमुखी, बांग्ला

लेखन विधाएं–गीत, छन्द, बालगीत, संस्मरण, निबन्ध

पूर्व में प्रकाशन– 'अंगारों के पथ पर' कविता संग्रह प्रकाशित हो चुका है।

संप्रति– शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्त (वर्ष 2017 ई0 में)

(वर्तमान में साहित्यिक सेवा)

प्रकाशन पत्रों में – राष्ट्रदेव (बरेली) अमर उजाला, दैनिक जागरण(बरेली)

विधि सन्देश (बदायूँ) न्याय पुजारी (आगरा) राजमोर्चा (पीलीभीत)

पत्रिकाओं में – राष्ट्रधर्म (लखनऊ) मानस चन्दन (सीतापुर) शिक्षक एकता

नैमिष गौरव, गायत्री तपोवन विप्र पंचायत, नालन्दा दर्पण

केरल हिन्दी अकादमी शोध पत्रिका (तिरूवनन्तपुरम)

संकलनों में–साहित्य सारथी (झांसी) नाजनीन, काव्य श्रंगार (बैतूल (म0प्र0)

झरोका (हैदराबाद) धरती और चाँद (राय बरेली)प्रत्यंचा (बिजनौर)

प्रकाशित कृति– 'बालगीतों की छाँव में' आपके हाथ में है।

सम्मान– कविवर मैथिली शरण गुप्त (गाँधी जयन्ती सन् 1999 मथुरा)

समाज रत्न सम्मान (महाशिवरात्रि सन् 2000 मथुरा)

काव्य महारथी (क्रिसमस डे 2000 वैतूलम0प्र0)

जायसी सम्मान (हिन्दी दिवस 2000 राय बरेली उ0प्र0
सरस्वती साहित्य सम्मान (हिन्दी दिवस 2001 गोरखपुर (उ0प्र0)
साहित्य रत्न सम्मान (नाहन हिमाचल प्रदेश)
काव्य रसिया (नव वर्ष 2001 वैतूल (म0प्र0)
प्रसारण – आकाशवाणी रामपुर से अनेकों बार काव्य पाठ
दूरदर्शन केन्द्र लखनऊ से काव्य भेंट वार्ता
यात्रांए– देश के लब्ध प्रतिश्ठित शीर्षस्थ मन्दिरों के दर्शन एवमं पूजन
वर्तमान पता– विमल कुटी, पंकज कालोनी, पूरनपुर
जनपद–पीलीभीत (उ0प्र0) पिन–262122
मोबा0–6395764979